# ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -14 अंक - 9 अगस्त-I, 2013 (पाक्षिक) माउण्ट आबू मूल्य 7.50 रु.


# आध्यात्मिक जीवन की मिसाल दादी प्रकाशमणि

**जिनकी मुस्कान अनेकों के कष्ट हर लेती थी, जिनकी दृष्टि पाने के लिए लोगों के कदम रूक जाते थे, जिनके सफल प्रशासन को देख सभी प्रशासनिक अधिकारी उनसे यह कला सीखना चाहते थे, जिनकी पवित्रता व सरलता पर स्वयं भगवान भी बलिहार जाते थे, जिन्होंने अनेकों को जीवन दान दिया, जिन्होंने प्यार देकर अनेकों को जीना सिखाया - ऐसी थी महान दादी प्रकाशमणि।**

जिनकी मुस्कान अनेकों के कष्ट हर लेती थी, जिनकी दृष्टि पाने के लिए लोगों के कदम रूक जाते थे, जिनके सफल प्रशासन को देख सभी प्रशासनिक अधिकारी उनसे यह कला सीखना चाहते थे, जिनकी पवित्रता व सरलता पर स्वयं भगवान भी बलिहार जाते थे, जिन्होंने अनेकों को जीवन दान दिया, जिन्होंने प्यार देकर अनेकों को जीना सिखाया - ऐसी थी हमारी महान दादी प्रकाशमणि। जिन्होंने सम्पूर्ण पवित्रता को धारण करके अपना सर्वस्व ईश्वरीय कार्य में स्वाहा कर दिया था। 25 अगस्त 2007 को वे अपना नश्वर देह त्यागकर महान परमात्म कार्य के लिए अन्यत्र चली गईं।

यों तो इस धरा पर अनेक महानात्माओं का आविर्भाव हुआ और होता रहेगा, परन्तु वे एक ऐसी महानात्मा थीं जिन्होंने अनेकों को

-शेष पेज 9 पर

## दादी प्रकाशमणि - एक प्रकाश स्तम्भ

दादी जी के बारे में आज तक अनेकों के द्वारा इतना कुछ कहा और लिखा गया है कि उनको पिरो कर एक लम्बी पुस्तकमाला बनाई जा सकती है। हरेक के पास दादी जी के साथ के अनुभवों के खजाने भरे पड़े हैं। दादी जी ने किसी के साथ एक दिन, एक घण्टा या फिर एक मिनट ही क्यों न बिताया हो वह पल उस आत्मा के जीवन भर के लिए यादगार बन चुका है। दादी जी ने किसी का हाथ अपने हाथ में लेकर उसे प्यार और ममता से ओत-प्रोत रुहानी दृष्टिमात्र दी हो वह दृष्टि उस आत्मा के लिए बाबा के यज्ञ में उसे मददगार बनने के लिए आजीवन प्रेरित करती रही है।

क्या बड़ा-क्या छोटा, क्या ब्राह्मण-क्या आगंतुक, क्या भारतीय -क्या डबल फारेनर्स, क्या टीचर्स -क्या यज्ञ रक्षक भाई, क्या दीदी क्या दादी की सखियाँ, हरेक के दिल में दादी जी ने अपने रूहानी व्यक्तित्व के किसी न किसी पहलू की छटा सदा के लिए छोड़ रखी है।

## दादी यज्ञ का श्वांस थीं

आज दादी हम सबके बीच साकार रूप में नहीं है पर हम, आप सभी से पूछना चाहते हैं कि ऐसा आपने कभी एक पल के लिए भी महसूस किया है? नहीं ना? बापदादा के बसाये यज्ञ की दादी जी श्वांस थी और यज्ञ की सांस अभी भी चल रही है तो इसका मतलब है कि दादी जी आज भी हम सबके बीच में हैं।

## वे पारसमणी थीं

दादीजी एक ऐसी पारसमणी थीं जो जिसे छू ले उसे सोना बना देने की क्षमता रखती थी। अक्सर उन्हें एक बार मिलने वाले के मन में सवाल उठता था कि एक बार मिलकर मुझे दादी जी ने इतना भरपूर किया है तो उनके साथ सदा रहने वाली आत्मायें कितनी पद्मापद्म भाग्यशाली होंगी, जिनको हर दिन हर पल भरपूरता का लाभ मिलता होगा। उस आत्मा को यह अफसोस होता कि काश मैं इतना समय दादी जी के

-शेष पेज 4 पर